राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहित
काष्ठ कला का कलात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा से
चित्रकला विषय में पीएच.डी. की उपाधि हेतु
शोध-प्रबंध की प्रस्तुत-रूपरेखा

शोध निर्देशक: **शोध छात्रा**

डॉ0 विजय कुमार **नेहा चौहान**
असिस्टेंट प्रोफेसर
ड्रॉइंग एण्ड पेंटिग विभाग,
कला संकाय,

ड्रॉइंग एण्ड पेंटिग विभाग,कला-संकाय

दयालबाग ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बीयूनिवर्सिटी)

दयालबाग आगरा- 282005

2022

विषय सूची

- शोध संकल्पना 1
- साहित्य पुनरावलोकन 1-2
- परिकल्पना 2
- उद्देश्य 2
- चर 3

कार्य प्रणाली 3

- अनुसंधान अभिक्ल्प
- प्रदत्त संकलन 3

(अ) प्राथमिक

(ब) द्वितीयक

- प्रतिदर्श 3
- साक्षात्कार 3-4
- प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया 4
- सीमा 4
- निष्कर्ष 4

शोध संकल्पना

विश्व के प्राचीन भवनों और मंदिरों और भवनों के स्थापत्य मेंपत्थर के साथ काष्ठ की मूर्तियों और अलंकरण आदि का चरम वैभव देखा जा सकता है। प्राचीन सभ्यताओं में लकड़ी और पत्थर के स्वतंत्र और मिले- जुले स्थापत्य के कई अवशेष मिले है। जिनमें लड़की के भवन, मूर्तियां, अलंकरण, उपकरण आदि है। बौद्ध धर्म के मंदिरों (पैगोड़ा) का स्थापत्य पुर्णयता लकड़ी पर निर्भर है। काष्ठ शिल्पकला में भारतीय धार्मिकता के विभिन्न मिथकीय रूपों को उत्कीर्ण किया जाता रहा है। कई देवी देवताओं की मूर्तियां भी काष्ठ से निर्मित हुई है।

काष्ठ कला उत्तराखंड, कश्मीर, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, हिमाचल से लेकर पूर्वोत्तर तमिलनाडु- केरल और कई दूसरे राज्यों में भी पाई जाती है। काष्ठ-कला द्वारा दरवाजे, झरोखे, भवन पर कला के उत्कृष्ठ नमूने प्रस्तुत किए गए है। काष्ठ कला प्राचीन होने के साथ ही अलग स्थान प्राप्त किए हुए है। काष्ठ द्वारा निर्मित खिलौने, कठपुतली भी प्राचीन समय में अत्यधिक बनाए गए।

भारत का हस्तशिल्प/परंपरागत शिल्प विश्व प्रसिद्ध है प्रचीन काल से ही यह शिल्प विश्व को दातों तले अंगुली दबाने को मजबूर करता रहा है तत्कालीन समय में ऐसे शिल्पों का निर्माण हुआ जिसने विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया नवीन अन्वेषण प्राचीन काल से परंपरागत काल से परम्परागत शिल्पकारों द्वारा होते रहे है। मनुष्य का बांस से साक्षात्कार अग्नि के माध्यम से हुआ, कला की अभिव्यक्ति के लिए कलाकार का मन हमेशा तत्पर रहता है, और यही तत्परता उपलब्ध माध्यमों के सहारे कला की अभिव्यक्ति का अवसर देती है।

साहित्य पुनरावलोकन- मैंने अपने शोध विषय के चयन हेतु कई स्थानों संग्रहालयों आदि का भ्रमण किया तथा कला से जुड़ी पुस्तकों को पढ़ा जब मैंने दिल्ली में कई संग्रहालयों का भ्रमण किया जैसे- “नेशनल म्यूजियम ऑफ आर्ट गैलरी”जहाँ मैने पेंटिंग, मूर्तिकला आदि देखी फिर मैने दिल्ली में ही स्थित “राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय”का भ्रमण किया जहाँ मुझे कला की ढेर सारी शिल्पकृतियाँ देखने को मिली वहाँ काष्ठ आकृतियाँ अत्यधिक प्रभावित लगी काष्ठ कला से संबंधित अत्यधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मैनें वहाँ के

अधिकारियों से वार्तालाप की व काष्ठ शिल्प से संबंधित अनेक पुस्तकें जैसे **"काष्ठ कला की पद्धति"दुर्गादुत्त** द्वारा लिखी गई पुस्तक तथा **प्रेमचंद्र विश्वकर्मा** की **"काष्ठ एवं धातु मूर्तिकला"**व **महेंद्र चंद्र शाडिल्य** की **"काष्ठ शिल्प"**आदि का अध्ययन किया जिसके पश्चात मैंने अपने शोध विषय के रूप में**"राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहित काष्ठ कला का कलात्मक अध्ययन"**का चयन किया।

परिकल्पना -

मैंने दिल्ली में स्थित **"राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय"**में प्रदर्शित विभिन्न प्रकार की शिल्पाकृतियों को देखा जो मुझे जनजातीय लोगों के जीवन को दर्शाते हुए भाई दिखी जिसमें काष्ठ शिल्प की बहुत सुन्दर शिल्पाकृतियाँ देखने को मिली। मैं आने शोध में काष्ठ कला से संबंधित कलाकरों व स्थानीय लोगों आदि से मिलकर और अधिक जानकरी प्राप्त करूंगी।

उद्देश्य-

काष्ठ शिल्प के अलंकरण व उससे जुड़ी संस्कृति व परम्परा से मैं अत्यधिक प्रभावित हुई तथा इससे जानकारी प्राप्त की। काष्ठ शिल्प पर शोध अधिक नहीं हुए है उस कारण तथा मेरी रूचि अधिक होने कारण मैंने इसे अपने शोध कार्य के लिए चुना मैं काष्ठ शिल्प से संबंधित अधिक जानकारी व इसके महत्व को खोजने का प्रयास करूंगी।

1. संग्रहालय में संग्रहित काष्ठ शिल्प की वस्तुओं का परिचय देना।
2. काष्ठ शिल्पाकृतियों की विषय वस्तु का सामाजिक, पारंपरिक व धार्मिक तथा उनकी विशेषताओं को प्रस्तुत करना।
3. काष्ठ शिल्पाकृतियों की तकनीक व उसके का पूर्णतः अध्ययन करना।
4. काष्ठ शिल्पकला का कलात्मक अध्ययन कर उसके सामाजिक, व्यक्तिगत व धार्मिक पक्षों को प्रस्तुत करना।
5. वर्तमान समय में काष्ठ शिल्प का महत्व व उपयोगिता को प्रस्तुत करना।

चर-

कला शिक्षक

कला विद्‌यार्थी

कला प्रशंसक एवं कला समीक्षक

सहपाठी

संग्रहालय के अधिकरी

कला संग्रहकर्ता

पुस्तकें

विवरणिका (कैटलॉग)

इंटरनेट

कार्य प्रणाली

अनुसंधान अभिक्लप- मेरा शोध कार्य संग्रहालय में संग्रहित काष्ठ कला की शिल्पाकृतियों का कलात्मक अध्ययन पर आधारित रहेगा।

प्रदत्त संकलन

प्राथमिक- संग्रहालय मे संग्रहित मौलिक शिल्पाकृतियों व कलाकारों के कार्य

स्थल होंगे।

द्‌वितीयक- लेख, पुस्तकें, प्रकाशित प्रत्र- पत्रकाऐं, वेब - साइट्स समाचार पत्र,

जनरलस, साक्षात्कार व काष्ठ शिल्प के संग्रहकर्ता आदि।

प्रतिदर्श- मेरे द्‌वारा संग्रहालय से लगभग 150-200 विभिन्न काष्ठ शिल्पाकृतियाँ का चयन किया जायेगा। ये काष्ठ शिल्पाकृतियाँ काष्ठ कला का अलंकरण व परम्परा तथा संस्कृति का प्रतिनिधित्व करेंगी।

साक्षात्कार- कलाकरों, कला समीक्षकों व कला विद्‌वानों का साक्षात्कार।

प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया- मेरी प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया शिल्पाकृतियों, चर्चाओं व विवेचनाओं पर आधारित होंगी।

सीमा- प्रत्येक शोध कार्य क एक सीमा होती है। यह शोध स्थानीय कलाकारों व कला समीक्षकों के साक्षात्कार, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, जनरल्स, संग्रहालय, कैटलॉग आदि पर आधारित है।

निष्कर्ष- राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय के काष्ठ शिल्पों में जनजातीय जीवन को दर्शाते हुऐ काष्ठ शिल्प दिखाई देते है। जो की प्राचीन समय की सामाजिक व धार्मिकता को दर्शाते हुए दिखाई देते है। ऐसा क्यो है ? इसे मै स्पष्ट करने का प्रयास करूंगी जिससे कि शोधार्थियों व पाठकों को काष्ठ शिल्प से जुड़ी जानकारी व ज्ञान प्राप्त हो सके।

विषय सूची

भूमिका - भारतीय शिल्प कला का सिंहावलोकन

अध्याय प्रथम - संग्रहालय का परिचय

1.1 काष्ठ शिल्प

अध्याय द्वितीय - संग्रहालय में संग्रहित काष्ठ शिल्पाकृतियों का विषयवस्तु

2.1 सामाजिक

2.2 पारंपरिक

2.3 धार्मिक

अध्याय तृतीय - काष्ठ शिल्पाकृतियों की तकनीक व माध्यम का अध्ययन

अध्याय चतुर्थ - काष्ठ शिल्पकला का कलात्मक अध्ययन

4.1 सामाजिक और पारम्परिक काष्ठ शिल्पकला के आधार पर

4.2 धार्मिक काष्ठ शिल्पकला के आधार पर

4.3 व्यक्तिगत काष्ठ शिल्पकला के आधार पर

अध्याय पंचम - काष्ठ शिल्पाकृतियों का वर्तमान समय में उपयोगिता व महत्व

उपसंहार

परिशिष्ट

- सन्दर्भ ग्रंथ सूची
- चित्र सूची
- Bibliography
- सूचीपत्र (कैटलॉग)
- वेवसाइट्स
- समाचार पत्र
- तकनीकी शब्दों का अर्थ
- कला समीक्षकों के विचार

भूमिका- सभ्यता के आरंभ से ही मानव लकड़ी का उपयोग कई प्रयोजनों जैसे कि ईंधन और निर्माण सामग्री के तौर पर करता आ रहा है। काष्ठ शिल्पकला एक हस्तकला है जो भारत के कई राज्यों में अत्यधिक प्रसिद्ध है काष्ठ शिल्पकला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य का काष्ठ से संबंध रहा है काष्ठ की उपयोगिता को समझकर पूर्वकाल से वर्तमान काल तक इसका उपयोग किसी न किसी रूप में होता आ रहा है ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर पाषाण युग मानव द्वारा काष्ठ का उपयोग आरंभिक का तक काष्ठ कला की उत्कृष्टता के प्रमाण मिलते हैं जनजातीय समूह में भी उनके ईष्ट देवी- देवताओं की मूर्तियां काष्ठ से निर्मित होती हैं। काष्ठ कला में जिन अलंकरणों व प्रतीक चिन्हों का प्रयोंग किया जाता था व उस समय के किसी न किसी धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक सरोकरों से जुडें होते थे।

प्रथम अध्याय - इस अध्याय के अंतर्गत मैं काष्ठ शिल्पकला से जुडे इतिहास का पूर्ण अध्ययन कर उसे करूंगी।

द्वितीय अध्याय - इसमें संग्रहालय से संग्रहित काष्ठ शिल्पकृतियों का विषयवस्तु जो की सामाजिक, धार्मिक व पारंपरिक शिल्पकला पर आधारित होगा।

तृतीय अध्याय - इसके अंतर्गत काष्ठ शिल्पकला की तकनीक व माध्यमों का अध्ययन प्रस्तुत करूंगी।

चतुर्थी अध्याय - इस अध्याय के अंतर्गत मैं काष्ठ शिल्पकला का कलात्मक अध्ययन किया जायेगा जो कि व्यक्तिगत, सामाजिक और धार्मिक पर आधारित होगा।

पंचम अध्याय - इस अध्याय में काष्ठ शिल्पकला का वर्तमान समय में महत्व व उपयोगिता प्रस्तुत करूंगी।

उपसंहार - इसके अंतर्गत काष्ठ शिल्पाकृतियों के प्रति भावत्मक व कलात्मक पक्ष तथा उससे जुड़ी कला का विकास को समाज में प्रस्तुत करना व उसकी महत्वता तथा उसकी सौन्दर्यत्मकता को प्रस्तुत करना होगा।

दिनांक   शोध छात्रा

नेहा चौहान

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण - 1996, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन वाराणसी।
2. उपाध्याय, वासुदेव - 1982, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान चैखम्भा, वाराणसी।
3. गुप्ता, नीलिमा - भारतीय लोक कला, स्वाति पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. गुप्त, जगदीश - प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. घोष, इला - 2004, संस्कृत वाड्य में शिल्प कलाएं, ईस्टन बुक लिंक्स, दिल्ली।
6. चट्टोपाध्याय, कमला देवी - भारतीय हस्तशिल्प पराम्परा, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारतपटियाला हाउस, नई दिल्ली।
7. विश्वकर्मा, प्रेमचंद्र - 2007, काष्ठ एवं धातु मूर्तिकल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
8. शाडिल्य, महेशचंद्र - 1996 काष्ठ कला।

9. सेमपुरा, प्रभा शंकर ओ. - 1975 भारतीय शिल्प संहिता, बम्बई।

BIBLIOGRAPHY

1 Abraham, T.M. 1964, Handicrafts in India, New Delhi

2 Kajmasan, Hani N. A Text Book of creative Design

3 Mehta, Rustam J. 1971, Art and Craft for Children, published By Methun educational Ltd. London

4 Swaminathan, J. 1987, The Prece3ving Fingures,All India Handi Crafts Board, New Delhi

5 Percy, Douglas: A history of wood engraving

6. Michell, Gearge : Living Wood (Sculptural Traditions of Southern, India),Mary Publications, Bombay.

7.Humbert, Claude: 1970, Ornamental Design, Great Britain.

INTER NET WEBSITES

- www.wikipedia.com
- http://hi.m.wikipedia.org
- https://m.youtube.com
- https://www.incredibaleindia.org
- http://dakshinkosaltoday.com

परिशिष्ट

चित्र संख्या-1 अठहारवी सदी (1712) के लगभग बनी घोडे की मूर्ति
(राष्ट्रीय शिल्पसंग्रहालय)

चित्र संख्या -2 तीन सिर वाले पशु व उस पर बैठी देवी की काष्ठ मूर्ति (1746) के लगभग बनी
(राष्ट्रीय शिल्पसंग्रहालय)

चित्र संख्या- 3 भूत की मूर्तियाँ (1751) के लगभग बनी
(राष्ट्रीय शिल्पसंग्रहालय)

चित्र संख्या- 4 कटहल की लकड़ी से बनी (1755) के लगभग पशु की मूर्ति
(राष्ट्रीय शिल्पसंग्रहालय)

https://www.istockphoto.com/vector/delhi-state-highlighted-red-on-indian-map-gm1222392595-358678158